अध्याय 24

इस्राएल को आशीष देते हुए बिलाम के आशीर्वचन (भाग 2)

यह अध्याय बिलाम और बालाक की कहानी समाप्त करता है। अध्याय 23 में इस्राएल को आशीर्वाद देने के लिए बिलाम ने दो सन्देश पाने के बाद अन्य दो और सन्देश प्राप्त किए। पहला सन्देश पशुओं की बलि चढ़ाने के द्वारा आरम्भ हुआ (23:29, 30) जिसके परिणामस्वरूप बालाक ने क्रोध से भरकर बिलाम से कहा कि इस्राएल को तीन बार आशीर्वाद देने के द्वारा उसने अपना आर्थिक प्रतिफल खो दिया है (24:10, 11)। पहले के समान, बिलाम ने इसी बात पर बल दिया कि वह मात्र वही बोलेगा जो परमेश्वर उसे बोलने के लिए कहता है। हालांकि इस बार यह नहीं बताया गया कि बिलाम ने कितने लोगों को देखा, 24:2 कहता है कि उसने "आँखें उठाईं, और इस्राएलियों को अपने गोत्र गोत्र के अनुसार बसे हुए देखा।"

इसके बाद बिलाम दूसरा सन्देश देने के लिए आगे बढ़ा जिसमें उसने एक राजा के आगमन की पूर्व नबूवत की जो मोआबियों को नष्ट कर देगा। बिलाम ने तीन छोटी वाणियाँ भी कहीं जिसमें उसने अमालेकियों, केनियों अश्शूर और एबेर के विनाश का भविष्य बतलाया। इस अध्याय के अन्त में बिलाम अपने स्थान पर लौट गया और बालाक ने भी अपना मार्ग ले लिया।

तीसरा आशीर्वचन:

"इस्राएल एक बड़ा राज्य है" (जारी) (24:1-14)

[1]यह देखकर कि यहोवा इस्राएल को आशीष ही दिलाना चाहता है, बिलाम पहले के समान शकुन देखने को न गया, परन्तु अपना मुँह जंगल की ओर कर लिया। [2]और बिलाम ने आँखें उठाईं, और इस्राएलियों को अपने गोत्र गोत्र के अनुसार बसे हुए देखा। और परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा। [3]तब उसने अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, "बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है, जिस

पुरुष की आँखें बन्द थीं उसी की यह वाणी है, 4ईश्वर के वचनों का सुननेवाला, जो दण्डवत् में पड़ा हुआ खुली हुई आँखों से सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है, उसी की यह वाणी है: कि 5हे याकूब, तेरे डेरे, और हे इस्राएल, तेरे निवास-स्थान क्या ही मनभावने हैं! 6वे तो घाटियों के समान और नदी के तट की वाटिकाओं के समान ऐसे फैले हुए हैं, जैसे कि यहोवा के लगाए हुए अगर के वृक्ष, और जल के निकट के देवदारु। 7और उसके घड़ों से जल उमड़ा करेगा और उसका बीज बहुत से जलभरे खेतों में पड़ेगा, और उसका राजा अगाग से भी महान् होगा, और उसका राज्य बढ़ता ही जाएगा। 8उसको मिस्र में से परमेश्वर ही निकाले लिये आ रहा है; वह तो बनैले सांड के समान बल रखता है, जाति जाति के लोग जो उसके द्रोही हैं उनको वह खा जायेगा, और उनकी हड्डियों को टुकड़े टुकड़े करेगा, और अपने तीरों से उनको बेधेगा। 9वह दबका बैठा है, वह सिंह या सिंहनी के समान लेट गया है; अब उसको कौन छेड़े? जो कोई तुझे आशीर्वाद दे वह आशीष पाए, और जो कोई तुझे शाप दे वह शापित हो।" 10तब बालाक का कोप बिलाम पर भड़क उठा; और उसने हाथ पर हाथ पटककर बिलाम से कहा, "मैं ने तुझे अपने शत्रुओं को शाप देने के लिये बुलवाया, परन्तु तू ने तीन बार उन्हें आशीर्वाद ही आशीर्वाद दिया है। 11इसलिये अब तू अपने स्थान पर भाग जा; मैं ने तो सोचा था कि तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूँगा, परन्तु अब यहोवा ने तुझे प्रतिष्ठा पाने से रोक रखा है।" 12बिलाम ने बालाक से कहा, "जो दूत तू ने मेरे पास भेजे थे, क्या मैं ने उनसे भी न कहा था, 13कि चाहे बालाक अपने घर को सोने-चाँदी से भरकर मुझे दे, तौभी मैं यहोवा की आज्ञा तोड़कर अपने मन से न तो भला कर सकता हूँ और न बुरा; जो कुछ यहोवा कहेगा वही मैं कहूँगा? 14अब सुन, मैं अपने लोगों के पास लौट कर जाता हूँ; परन्तु पहले मैं तुझे चिता देता हूँ कि अन्त के दिनों में वे लोग तेरी प्रजा से क्या क्या करेंगे।"

आयतें 1, 2. बिलाम की तीसरी वाणी पहली दो वाणियों की तुलना में भिन्नता के साथ आरम्भ होती है। यह देखकर **कि यहोवा इस्राएल को आशीष ही दिलाना चाहता है, बिलाम पहले के समान शकुन देखने को न गया**। NLT कहता है कि उसने "पहले के समान शकुन विचार का आश्रय नहीं लिया।" "पहले के समान" अथवा "जैसा पहले किया" पद पिछले समय की ओर संकेत कर सकता है जैसा उसने पहली दो वाणियों में खोज की अथवा यह बीते हुए बहुत ही निकट के समय (उसके पारम्परिक अभ्यास) की ओर संकेत कर सकता है। सन्दर्भ के अनुसार, यह सम्भावित रूप से उसके द्वारा प्रथम दो वाणियों की खोज करने की ओर संकेत करता है (23:3, 15) अथवा बताए गए विवरण में इस बिन्दु पर टिप्पणी करने का कोई कारण नहीं रहा होगा।[1]

इसके स्थान पर, **उसने अपना मुँह जंगल की ओर कर लिया** और **इस्राएलियों को देखा**। वे **अपने गोत्र गोत्र के अनुसार बसे हुए** थे जो मिलापवाले तम्बू के चारों ओर नियुक्त उनके स्थान की ओर संकेत करता है (2:1-32)। इस बार **परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा**। परमेश्वर के द्वारा दिए हुए सन्देश को दोहराने के स्थान

पर बिलाम ने वही कहा जैसा परमेश्वर ने उसे प्रेरणा दी।

आयतें 3, 4. बिलाम ने स्वयं के सन्दर्भ के साथ अपनी तीसरी **गूढ़ बात** आरम्भ की जैसा उसने पहले सन्देश में किया था (23:7)। वह स्वयं का विवरण **जिस पुरुष की आँखें बन्द थीं, ईश्वर के वचनों का सुननेवाला** (אֵל, *'एल)*, और **सर्वशक्तिमान का दर्शन पाने** (שַׁדַּי, *शदाय)* वाले के रूप में करता है।[2] वह इस बात पर बल दे रहा था कि उसके शब्द परमेश्वर की ओर से थे जिसने बोलने वाले भविष्यद्वक्ता पर स्वयं को प्रकट किया था।

बिलाम ने यह भी कहा कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जो **दण्डवत् में पड़ा हुआ** था और **उसकी आँखें खुली** हुई थी। सम्भवतः यह मोआब के मार्ग पर उसके अनुभव का सन्दर्भ है जब वह उस समय गिर गया जब उसकी गदही सड़क पर नीचे बैठ गई। जब परमेश्वर के द्वारा उसकी आँखें "खोल" दी गई तब वह "यहोवा के दूत" को देख पाया (22:31) और मात्र परमेश्वर का वचन बोलने की आवश्यकता के अन्तर्गत आ गया। अन्य सम्भावना यह है कि "दण्डवत् में पड़ा हुआ" और "खुली हुई आँखें" भविष्यद्वक्ता की मग्न कर देने वाली, दर्शन से भरी हुई स्थिति का वर्णन प्रदान करती हैं।

आयतें 5, 6. उसने अलंकारों का प्रयोग किया जिसने उसकी सुन्दरता, समृद्धि और फ़लवन्तता पर ज़ोर दिया और वर्णन किया कि **इस्राएल** जाति क्या ही **मनभावनी** है। इन कथनों ने सुझाया कि परमेश्वर के लोग सुन्दर **निवास-स्थानों** में, उपजाऊ **घाटियों ... वाटिकाओं के समान** बहती जलधाराओं के निकट निवास करेंगे। वे **जल के निकट के देवदारु के समान** स्थायी रूप से **लगाए** जाएँगे (देखें भजन 1:3)।

आयत 7. इस्राएल **जल** की बहुतायत का आनन्द लेगा; यह **उसके घड़ों से उमड़ा करेगा**। यहाँ पर सम्भावित रुप से फ़सल की सिंचाई के काम में आने वाले पात्रों के जोड़े से बँधे हुए लकड़ी के जुए को उठाए हुए व्यक्ति का चित्रण है।[3] **उसका बीज बहुत से जलभरे खेतों में पड़ेगा**, या तो फ़सल की बहुतायत की ओर या जनसंख्या में एक बड़ी वृद्धि की ओर संकेत करता है।

बिलाम ने इस्राएल के **राज्य** की सामर्थ्य की भी घोषणा की और एक ऐसे दिन की भविष्यद्वाणी की जब इस्राएल का अपना एक **राजा** होगा। राजा शाऊल के दिनों में अमालेकियों पर राज करने वाले राजा **अगाग** से भी बढ़कर यह महान् होगा (1 शमूएल 15:8)। मूसा के समय में अमालेकी लोग इस्राएल के सबसे बड़े शत्रु थे परन्तु निर्गमन के शीघ्र बाद ही वे इस्राएल के द्वारा पराजित कर दिए गए (निर्गमन 17:8-16)। ऐसा लगता है कि "अगाग" शब्द अनेक अमालेकी शासकों का नाम रहा है।[4] 24:20 में बिलाम ने अमालेक के विरुद्ध सीधे शब्दों में बोला।

आयत 8. बिलाम ने भविष्यद्वाणी की कि जो **परमेश्वर** इस्राएल को **मिस्र में से** छुड़ाकर लाया वही परमेश्वर अपने लोगों को **जाति जाति के लोगों** पर जय देगा। उसने परमेश्वर के विनाशकारी सामर्थ्य की तुलना **बनैले सांड के सींगों** से की। इस आयत की भाषा 23:22 का दोहराव करती है।

आयत 9. बिलाम ने अपनी वाणी की समाप्ति यह कहते हुए की कि इस्राएल

एक सिंह के समान है जिसके सामर्थ्य को चुनौती नहीं दी जानी चाहिए (देखें 23:24)। उसने पूछा, **"अब उसको कौन छेड़े?"** परमेश्वर ने निश्चित कर दिया था कि जो कोई इस्राएल को **आशीर्वाद** दे वह **आशीष** पाएगा और जो इस्राएल को **शाप** देगा वह **शापित** होगा, जो कि अब्राहम को दिए हुए उसके वायदे की प्रतिध्वनि प्रदान करता है (उत्पत्ति 12:3)।

आयत 10. इस बिन्दु पर **बालाक का कोप** ऊँचे शिखर पर पहुँच गया।[5] पाठ्य कहता है कि उसका क्रोध **बिलाम पर भड़क उठा; और उसने हाथ पर हाथ पटके**। हाथ पर हाथ पटकना क्रोध को प्रकट करने का एक चिन्ह है (अय्यूब 27:23; 34:37; विलाप. 2:15)। राजा ने **बिलाम से कहा, "मैं ने तुझे अपने शत्रुओं को शाप देने के लिये बुलवाया, परन्तु तू ने तीन बार उन्हें आशीर्वाद ही आशीर्वाद दिया है।"** भविष्यद्वक्ता को जिस काम के लिए दक्षिणा देकर बुलाया गया उसका उसने ठीक विपरीत कार्य किया।

आयत 11. बालाक ने बिलाम को आज्ञा दी कि वह अपने **स्थान** पर **भाग** जाए। वह शायद तुरन्त प्रभाव में यह कह रहा था, "इससे पहले कि मैं तुम्हें मार डालूँ तुम यहाँ से निकल जाओ!" उसने अन्त में बिलाम से कहा, **"मैं ने तो सोचा था कि तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूँगा, परन्तु अब यहोवा ने तुझे प्रतिष्ठा पाने से रोक रखा है।"** व्यंग्यपूर्वक, परमेश्वर के प्रति इस भविष्यद्वक्ता की निष्ठा ने उसे राजा के उन आर्थिक प्रतिफ़लों को पाने से रोके रखा जिनका वायदा राजा ने किया था।

आयतें 12, 13. बिलाम ने वही बात दोहराते हुए प्रत्युत्तर दिया जैसा उसने राजा के दूतों से पूर्व में कहा था: **"चाहे बालाक अपने घर को सोने-चाँदी से भरकर मुझे दे, तौभी मैं यहोवा की आज्ञा तोड़कर अपने मन से न तो भला कर सकता हूँ और न बुरा; जो कुछ यहोवा कहेगा वही मैं कहूँगा"** (देखें 22:18)।

आयत 14. उसने कहा कि वह अपने **लोगों** के पास लौट कर चला जाएगा। फिर भी जाने से पहले - मानो चोट पर और अपमान करना चाहता हो - वह राजा को बताएगा कि **अन्त के दिनों में** इस्राएली लोग मोआबियों के साथ क्या क्या करेंगे।

चौथी आशीर्वचन:

"एक तारा उदय होगा" (24:15-19)

[15]फिर वह अपनी गूढ़ बात आरम्भ करके कहने लगा, "बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है, जिस पुरुष की आँखें बन्द थी उसी की यह वाणी है, [16]ईश्वर के वचनों का सुननेवाला, और परमप्रधान के ज्ञान का जाननेवाला, जो दण्डवत् में पड़ा हुआ खुली हुई आँखों से सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है, उसी की यह वाणी है। [17]मैं उसको देखूँगा तो सही, परन्तु अभी नहीं; मैं उसको निहारूँगा तो सही, परन्तु समीप होके नहीं: याकूब में से एक तारा उदय होगा, और इस्राएल में से एक राज दण्ड उठेगा; जो मोआब की सीमाओं को चूर कर देगा, और सब दंगा करनेवालों

को गिरा देगा। 18तब एदोम और सेईर भी, जो उसके शत्रु हैं, दोनों उसके वश में पड़ेंगे, और इस्राएल वीरता दिखाता जाएगा। 19और याक़ूब ही में से एक अधिपति आएगा जो प्रभुता करेगा, और नगर में से बचे हुओं का भी सत्यानाश करेगा।"

बिलाम की चौथी वाणी, मोआबियों को नष्ट कर देने वाले एक राजा के आगमन की भविष्यद्वाणी करते हुए दर्शनों की श्रृंखला में उच्च शिखर के साथ है। यहाँ पर दिया गया व्यंग्य प्रकट है: जिसे मोआब की तरफ़ से इस्राएल को शाप देना था उसने मोआब को शाप दे दिया था।

आयतें 15, 16. बिलाम की चौथी **गूढ़ बात** लगभग एकदम उसकी तीसरी गूढ़ बात के समान थी जो इस बात पर बल देती थी कि उसने स्वयं **परमेश्वर** से अपना सन्देश प्राप्त किया है (24:3, 4 और 24:15, 16 के बीच तुलना करें)। इन दोनों पदों में एकमात्र अन्तर यह है कि बिलाम स्वयं के वर्णन के बीच में द्वितीय पद में **और परमप्रधान के ज्ञान का जाननेवाला**, जैसे शब्द जोड़ता है।

आयत 17. तब उसने अपने सन्देश की गहरी बात प्रदान की जहाँ उसने **एक तारे** के बारे में बताया जो **याक़ूब में से एक तारा उदय होगा** और **इस्राएल में से एक राज दण्ड उठेगा** और **मोआब की सीमाओं को चूर कर देगा**। इन शब्दों के बारे में तीन तथ्य स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं: (1) वे भविष्य में होने वाले एक समय के लिए बता रहे थे (भविष्यद्वाणी की गई घटना **अभी नहीं** थी और न **समीप** थी)। (2) उन्होंने एक राजा के आने के बारे में पूर्व में ही बता दिया। तीसरी पंक्ति का शब्द "तारा," चौथी पंक्ति के शब्द "राज दण्ड" के साथ समान अन्तर में है और ये शब्द किसी राजा के शासन का चिन्ह प्रदान करते हैं (देखें उत्पत्ति 49:10; यशा. 14:12)।[6] (3) आने वाला राजा "मोआब" पर विजय प्राप्त करेगा। **शेत शब्द** मोआब के साथ समान अन्तर में है और इस कारण शायद एक तरीके से मोआब प्रदेश की ओर संकेत करता है।

आयतें 18, 19. ये आयतें यह भी जोड़ती हैं कि यह आने वाला राजा **एदोम** को भी हरा देगा। **याक़ूब ही में से एक अधिपति** (पूर्वानुमान के अनुसार आने वाला राजा) **नगर में से बचे हुओं का भी सत्यानाश करेगा**, जो सम्भावित रूप से "मोआब नगर" का एक सन्दर्भ है जहाँ बिलाम पहली बार बालाक से मिला (22:36)। पूर्व में जब इस्राएल ने एदोम और मोआब के चारों ओर यात्रा की तब उन्हें निर्देश मिले कि वे उन लोगों पर आक्रमण नहीं करें (व्यव. 2:1-9)।

इस्राएल में उठ खड़े होने वाले राजा के लिए की गई नबूवत आरम्भिक रुप से इस्राएल के महान राजा दाऊद में पूरी हुई जिसने मोआबियों और एदोमियों पर जय प्राप्त की (2 शमूएल 8:2, 14)। फिर भी यहूदी अनुवादकों ने इस नबूवत में मसीहा के आने का एक पूर्वानुमान देखा। मसीही लोग इसे निर्णायक रूप से यीशु मसीह में पूरा होते हुए देखते आए हैं जो, "दाऊद का मूल और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा है" (प्रका. 22:16), जिसके जन्म की घोषणा एक तारे के द्वारा की गई (मत्ती 2:2)।[7] मसीह वह राजा है जो अपने राज्य पर राज करता है और जिसके सामने अन्त में "हर एक घुटना टिकेगा" (फिलि. 2:10)।

इन भविष्यद्वाणियों की तुलना उन वायदों से की जा सकती है जो वायदे परमेश्वर ने इस्राएल के साथ किए। किसी व्यक्ति को उस समय न्यायोचित ठहराया जा सकता है जब जब वह इस वायदे को बोलता है कि "भूमण्डल के सारे कुल" अब्राहम से आशीष पाएँगे (उत्पत्ति 12:3) और यह वायदा याकूब से आने वाले एक "तारे" के वायदे में नया किया गया (गिनती 24:17)। सम्पूर्ण में देखने पर बिलाम के द्वारा इस्राएल पर जो आशीषें कही गईं वे नई कर दी गईं और उन आशीषों ने, आरम्भ के अवसरों में इस्राएल पर परमेश्वर के द्वारा घोषित अनेक आशीषों पर फिर से बल दिया (देखें *परिशिष्ट: गॉडस प्रोमिसेस रिन्यूड इन बलाम्स ओराक्ल्स इन नम्बर्स 23 एण्ड 24*, पेज 153)। इस प्रकार उन्होंने इस्राएल को बड़ा उत्साह उपलब्ध करवाया जब यह जाति - एक लम्बी यात्रा के अन्त में - वायदे के देश में प्रवेश करने की तैयारी कर चुकी थी।

अन्यजतियों के लिए बिलाम के तीन भविष्यवाणियाँ (24:20-24)

[20]फिर उसने अमालेक पर दृष्टि करके अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, "अमालेक अन्यजातियों में श्रेष्ठ तो था, परन्तु उसका अन्त विनाश ही है।" [21]फिर उसने केनियों पर दृष्टि करके अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, "तेरा निवास-स्थान अति दृढ़ तो है, और तेरा बसेरा चट्टान पर तो है; [22]तौभी केन उजड़ जाएगा। और अन्त में अश्शूर तुझे बन्दी बनाकर ले आएगा।" [23]फिर उसने अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, "हाय जब ईश्वर यह करेगा तब कौन जीवित बचेगा? [24]तौभी कित्तियों के पास से जहाज वाले आकर अश्शूर को और एबेर को भी दु: ख देंगे; और अन्त में उसका भी विनाश हो जाएगा।"

आयत 20. बिलाम का पूरा सन्देश विभिन्न अन्य जातियों के विनाश की भविष्यद्वाणी करते हुए तीन लघु वाणियों के साथ समाप्त होता है। पहला यह था कि **अमालेक अन्यजातियों में श्रेष्ठ तो था** फिर भी वह **विनाश** को देखेगा। सम्भावित रूप से अमालेकी मात्र स्वयं के विचारों के अनुसार ही अन्यजातियों में श्रेष्ठ थे। अमालेकी लोग इस्राएल के प्रति सदैव "कठोर शत्रु" रहे थे।[8] उन्होंने इस्राएल के मिस्र से छुड़ाए जाने के बाद जंगल में उनके विरुद्ध युद्ध किया (निर्गमन 17:8-16; देखें गिनती 14:43-45; न्यायियों 6:3, 33)। बाद में शाऊल को निर्देश दिए गए कि अमालेकियों को नष्ट कर दिया जाए (1 शमूएल 15)। दाऊद ने भी उन्हें हराया (1 शमूएल 30:17) और वे अन्त में हिजकिय्याह के समय में नष्ट कर दिए गए (1 इतिहास 4:43)।

आयतें 21, 22. इसके साथ ही दूसरी वाणी **केनियों** के विरुद्ध थी जिसका **निवास-स्थान चट्टान पर था**। उन्हें नष्ट कर दिया जाएगा। यह नबूवत कठिन है क्योंकि केनियों का इस्राएलियों के जंगल की यात्रा के समय उनके साथ अच्छे सम्बन्ध थे। न्यायियों 1:16; 4:11 के अनुसार मूसा का साला होबाब एक केनी

व्यक्ति था। यह सन्देश भावी समय की ओर देख रहा था जब अमालेकियों के समान केनी लोग इस्राएल के शत्रु बन जाएँगे। तब **अश्शूर** [उन्हें] **बन्दी बनाकर ले आएगा।** "अश्शूर" वही है जिसे अंग्रेज़ी में प्रायः "अस्सीरिया" कहा जाता है। फिर भी, यहाँ पर यह शब्द शायद "एक छोटे गोत्र का संकेत देता है जो उत्तरी सिनई में रहता था जिसका वर्णन पुराने नियम में अनेक स्थानों में किया गया (उत्पत्ति 25:3, 18; 2 शमूएल 2:9; भजन 83:8)।" केनी लोग इस कारण "अपने पड़ोसी गोत्र अश्शूर के द्वारा बन्दी बना लिए जाएँगे।"[9]

आयतें 23, 24. तीसरी लघु वाणी यह है कि **कित्तियों** [सम्भवतः यूनान या साइप्रस] **के पास से जहाज ... आकर अश्शूर और एबेर को भी दुः ख देंगे** परन्तु **उनका भी** [अनेक जहाज़; देखें NIV] **विनाश हो जाएगा**। अगर "अश्शूर" और "एबेर" का अर्थ अस्सीरिया और मेसोपोटामिया है तो "कित्तियों के पास से जहाज वाले" शायद सिकन्दर महान अथवा रोमियों की जीत का संकेत देते हैं। दूसरी तरफ़, अगर "अश्शूर" एक छोटे गोत्र की ओर संकेत करता है, जैसा पिछली नबूवत में बताया गया और "एबेर" एक पड़ोस का गोत्र था तो "कित्तियों के पास से जहाज वाले," शायद "समुद्री लोगों" की एक लहर की ओर संकेत करता है जिन्होंने बारहवीं शताब्दी ई.पू. पूर्व में कनान पर हमला किया। उन "समुद्री लोगों" में पलिश्ती लोग थे जो अन्ततः राजा दाऊद के द्वारा हरा दिए गए।[10]

पुराने नियम में भविष्यद्वाणी की अनेक पुस्तकें भी विदेशी जातियों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ सम्मिलित करती हैं और उन वाणियों का उद्देश्य परमेश्वर के लोगों को उत्साह प्रदान करना था। उसी प्रकार, परमेश्वर ने इन वाणियों के बारे में शायद यह मनसा रखी कि इस्राएल की मनोदशा को सहारा दिया जा सके। एक "तारा" उदय होने के बारे में पूर्व में की गई नबूवत के साथ ही इन तीनों भविष्यद्वाणियों की व्याख्या आरम्भिक एकाधिपत्य - विशेष रुप से दाऊद के राज्य - के दिनों की ओर संकेत देने के लिए किया जा सकता है जब इस्राएल ने मोआबियों, एदोमियों, अमालेकियों और फ़िलिस्तीनी लोगों को पराजित किया (2 शमूएल 8:1-14)। अगर यह व्याख्या सही है तो बिलाम, परमेश्वर की ओर से बोलते हुए यह घोषणा कर रहा था कि भविष्य में जब वायदे का राजा आएगा तब इस्राएल अपने शत्रुओं को पराजित कर देगा।

निष्कर्ष (24:25)

[25]तब बिलाम चल दिया, और अपने स्थान पर लौट गया; और बालाक ने भी अपना मार्ग लिया।

आयत 25. दक्षिणा देकर बुलाए गए भविष्यद्वक्ता की कहानी किसी स्थान की ओर संकेत देने के साथ ही उसी प्रकार समाप्त होती है जैसे यह आरम्भ हुई (22:5)। जैसा कि **बिलाम** मोआब में कुछ समय के बाद रहा (अध्याय 31), इसलिए **अपने स्थान** वहाँ के लिए संकेत करता है जहाँ बिलाम मोआब में रहता था। लेखक ने

बिलाम की चार अन्तिम वाणियों के प्रति बालाक की प्रतिक्रिया का कोई रिकॉर्ड नहीं रखा (24:15-24); बालाक ने वह सब कुछ कहा होगा जो वह मेसोपोटामिया के भविष्यद्वक्ता को कहना चाहता था जिसने उसे बहुत निराश किया और उसे क्रोध दिलाया था । अध्याय 31 में बिलाम और बालाक की कहानी के बारे में अधिक विवरण प्रकट किया गया है।

अनुप्रयोग

"एक टेढ़ा मेड़ा व्यक्ति" (अध्याय 22-24; 31)

बच्चों की एक कविता इस प्रकार कहती है,

> एक टेढ़ा मेड़ा व्यक्ति था, और वह एक टेढ़े मेड़े मार्ग पर गया,
> उसने एक टेढ़ी मेड़ी सीढ़ी के पास टेढ़े मेड़े छह पेन्स पाए;
> वह एक टेढ़ी मेड़ी बिल्ली खरीद लाया,
> जिसने एक टेढ़ा मेड़ा चूहा पकड़ा,
> और वे सब एक छोटे टेढ़े मेड़े घर में मिलकर रहने लगे।[11]

जब मैंने गिनती 22-24 में बिलाम की कहानी पढ़ी तब मुझे वह छोटी कविता याद आ गई क्योंकि इस कहानी में अधिकतर सब कुछ "टेढ़ा मेड़ा" है।

यह कहानी दो शत्रुओं की है। एक तरफ़ राजा बालाक और मोआबी हैं। बालाक के पास इस्राएल के लिए एक योजना है: वह चाहता था कि इस्राएल को शाप मिले जिससे वह उन्हें हरा सके। दूसरी तरफ़ इस्राएली लोग परमेश्वर के साथ खड़े थे। परमेश्वर के पास भी इस्राएल के लिए एक योजना थी: उसकी योजना उन्हें आशीर्वाद देने की थी। ये शत्रु पर्याप्त मात्रा में "सीधे" थे - अर्थात वे ठीक वैसे ही थे जैसा उनके होने की अपेक्षा हम उनसे रखते हैं और उन्होंने वैसा ही किया जैसा हम उनके द्वारा करने की अपेक्षा रखते हैं।

फिर भी, यही बात हम बिलाम के लिए नहीं कह सकते जो एक अर्थ में इन दो शत्रुओं के बीच में खड़ा हुआ। बिलाम के बारे में सब कुछ "टेढ़ा मेड़ा" था-अर्थात जैसा लग रहा था ऐसा कुछ भी नहीं था। ऐसा लग रहा था कि बिलाम अपने विचार में स्थिर नहीं था। साहित्यिक अर्थ में, इस कहानी में जो कुछ हुआ वह लगभग व्यंग्यात्मक है। दूसरे तरीके से देखने पर, पूरी कहानी आश्चर्यों से भरी हुई है।

बिलाम वैसा नहीं था जैसा वह दिखाई दे रहा था। इस्राएलियों ने जंगल में लगभग चालीस वर्ष बिताने के बाद यरदन नदी के पास कनान के पूर्व के प्रदेशों को जीत लिया था। वे "मोआब के अराबा" (22:1) में छावनी किए हुए थे जहाँ कुछ मोआबी और मिद्यानी रहते थे। बालाक ने इस्राएल को मोआब के प्रति एक खतरे के रूप में देखा और इसलिए एक जाने माने नबूवत करने वाले व्यक्ति बिलाम को मेसोपोटामिया से बुलावा भेजा जिससे वह आए और उसके लिए इस्राएल को

शाप दे। बालाक के सन्देशवाहक बिलाम के पास पहुँचे और उन्होंने इस्राएल को शाप देने के लिए उसके सम्मुख धन का प्रस्ताव रखा; बिलाम ने कहा कि वह इसके विषय में प्रभु से पूछेगा। बिलाम ने परमेश्वर के व्यक्तिगत नाम का प्रयोग किया। क्या यह व्यक्ति, जो परमेश्वर के लोगों से बहुत दूर निवास करता था, एकमात्र सच्चे परमेश्वर में विश्वासी था? हो सकता है। बिलाम उपयुक्त रूप से "किराए का भविष्यद्वक्ता" था - एक ऐसा भविष्यद्वक्ता जिसे अगर सही मूल्य मिलता था तो वह किसी देवता के नाम से आशीष अथवा शाप देने के लिए तैयार रहता था। परमेश्वर ने बिलाम से कहा कि वह बालाक के पास नहीं जाए और इस्राएल को शाप नहीं दे। पहली बार तो बिलाम ने आज्ञा मानी और बालाक के सेवकों को खाली हाथ भेज दिया।

बालाक ने अधिक कर्मचारी भेजते हुए और अधिक धन देने का प्रस्ताव रखते हुए आग्रह किया। बिलाम ने यह कहते हुए फिर मना कर दिया, "चाहे बालाक अपने घर को सोने-चाँदी से भरकर मुझे दे दे, तौभी मैं अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता, कि उसे घटाकर या बढ़ाकर मानूँ" (22:18)। जब हम यह पढ़ते हैं तो हम सोचते हैं, "यह परमेश्वर का कितना अद्‌भुत भविष्यद्वक्ता और सेवक है!" फिर भी, बिलाम ने उन कर्मचारियों को रात भर रुकने के लिए आमन्त्रित किया और कहा कि वह इस बात की खोज करेगा कि प्रभु उसे और क्या कहना चाहता है। उस रात परमेश्वर ने उससे कहा कि वह उनके साथ जाए।

जब बिलाम मोआब जाने लगा तब परमेश्वर उससे क्रोधित हो गया। मार्ग में "प्रभु का दूत" खड़ा हो गया जो ऊपरी तौर पर बिलाम को मार डालना चाहता था। बिलाम उस दूत को नहीं देख पाया परन्तु जिस गदही पर वह बैठा था वह उसे देख पायी। उस मार्ग में गदही ने दूत के प्रति तीन बार प्रतिक्रिया की जिससे बिलाम बच गया। बिलाम को मालूम नहीं था कि उसकी गदही इस प्रकार की अजीब हरकत क्यों कर रही है और उसने उसे पीटा। अन्त में परमेश्वर ने ऐसा किया कि गदही बिलाम से बोल सके और तब बिलाम की आँखें खोल दी जिससे उसे मारने के लिए तैयार खड़े दूत को वह देख सके।

गदही के बिलाम से बात करने में महत्वपूर्ण रूप से व्यंग्य शामिल है। वहाँ एक प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता बिलाम था जो दूत को नहीं देख सका परन्तु गदही उसे देख पायी! बिलाम एक भविष्यद्वक्ता था जो परमेश्वर की ओर से बोलने का दावा करता था फिर भी परमेश्वर ने उससे एक गदही के द्वारा बात की! फिर भी बिलाम ने इस घटना में एक भविष्यद्वक्ता के रूप में कार्य किया अर्थात परमेश्वर ने उससे बात की और उसके द्वारा बात की। परमेश्वर बिलाम से अप्रसन्न हो गया और उससे कहा, "इसलिये कि तू मेरे सामने उलटी चाल चलता है" (22:32), जिससे परमेश्वर यह संकेत दे रहा था कि वह बिलाम को मार डालने के लिए निकट आ गया था। तब बिलाम ने स्वीकार किया, "मैं ने पाप किया है" (22:34)।

परमेश्वर अप्रसन्न क्यों हुआ? बिलाम ने क्या गलत किया था? परमेश्वर ने उसे अपना उत्तर दे दिया था फिर भी उसने दूसरी बार परमेश्वर से पूछा। सम्भावित रुप से अपने साहसी शब्दों के बाद भी वह एक बड़ी धन राशि चाहता था जिसके

लिए उससे वायदा किया गया था। ऐसा लग रहा था कि बिलाम परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में बहुत अधिक रुचि रखता है परन्तु वास्तव में उसकी रुचि धन कमाने की थी।

ऐसा सुझाना सही होगा कि जिस प्रकार बिलाम ने बालाक के सन्देशवाहकों से बात की उससे उन्हें लगा कि वह अच्छा सौदा करने की इच्छा रखता है। बिलाम एक ऐसा व्यक्ति था जो शायद "नहीं" कह रहा होगा परन्तु उसका अर्थ "हाँ" था।

वह विचार हमें एक अन्य प्रश्न के साथ छोड़ता है: अगर परमेश्वर बिलाम से अप्रसन्न था - और बिलाम वैसा अच्छा व्यक्ति नहीं था जैसा वह दिखाई देता था - तो परमेश्वर ने उसे बालाक के पास जाने की स्वीकृति क्यों दी? एक सम्भावना यह है कि परमेश्वर ने बिलाम को बालाक के पास इसलिए भेजा क्योंकि वह चाहता था कि उसके लोग आशीर्वाद पाएँ। उस उद्देश्य के लिए परमेश्वर एक दोषी पात्र को भी काम में ले सकता है। परमेश्वर अपने मानवीय यन्त्रों के कारण नहीं पर मानवीय यन्त्रों के स्थान पर अपने उद्देश्यों को पूरा कर *देगा*।

बिलाम ने अनपेक्षित किया। बिलाम ने वह नहीं किया जैसा उससे अपेक्षा की गई; इसके स्थान पर उसने वह किया जैसा उससे अपेक्षा नहीं की गई! जब वह भविष्यद्वक्ता मोआब के अराबा में पहुँचा तब बालाक ने उससे अपेक्षा रखी कि वह इस्राएल को शाप दे। शाप दिए जाने के लिए बालाक ने तीन बार व्यवस्थाएँ की; परन्तु तीनों बार बिलाम ने इस्राएलियों को शाप देने के स्थान पर उन्हें आशीर्वाद दे दिया।

तब बिलाम ने आशीर्वाद की चौथी गूढ़ बात कही। एक भाग में उसने कहा, "याकूब में से एक तारे का उदय होगा, इस्राएल में से एक राजदण्ड उठेगा। वह मोआब देश के सीमान्तों को कुचलेगा, शेत के पुत्रों को धूल-धूसरित करेगा" (24:17; BSI; CL)।

बालाक निराश कर दिया गया। वह अपने शत्रु को शाप देने के लिए दूर देश से बड़े खर्चे पर एक शक्तिशाली भविष्यद्वक्ता को लाया - परन्तु उस भविष्यद्वक्ता ने इसके स्थान पर उन्हें आशीर्वाद दे दिया था! हम उसकी झुँझलाहट को सुन सकते हैं: पहले आशीर्वाद के बाद उस राजा ने कहा, "तू ने मुझ से क्या किया है? मैं ने तुझे अपने शत्रुओं को शाप देने को बुलवाया था, परन्तु तू ने उन्हें आशीष ही आशीष दी है" (23:11)। दूसरी बार आशीर्वाद देने पर उसने कहा, "उनको न तो शाप देना, और न आशीष देना" (23:25)। तीसरी बार, आशीर्वाद के बाद वह इतना क्रोधित हो गया कि उसने हाथ पर हाथ पटककर कहा, "मैं ने तुझे अपने शत्रुओं को शाप देने के लिये बुलवाया, परन्तु तू ने तीन बार उन्हें आशीर्वाद ही आशीर्वाद दिया है। इसलिये अब तू अपने स्थान पर भाग जा ..." (24:10, 11)।

परमेश्वर ने शापों को आशीर्वाद में बदलते हुए अनपेक्षित किया। इस परिस्थिति में इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना एक आश्चर्यजनक तरीके से पूरी हुई। डरे हुए शत्रु के होते हुए, सांठगांठ करने वाले एक राजा और एक लालची और पलट जाने वाले भविष्यद्वक्ता के होते हुए भी परमेश्वर के लोग आशीषित किए गए। वे लोग बलवान थे, संख्या में अधिक थे, धर्मी थे, फलवन्त थे और परमेश्वर

के द्वारा आशीर्वाद पाए हुए लोग थे और वे ऐसे ही लोग बने रहेंगे। अपने शत्रुओं पर विजयी होते हुए वे अपने शत्रुओं या भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा भी रोके नहीं जा सकते थे।

फिर, घटनाओं में एक अजीब मोड़ के कारण इस प्रकार आशीष दिया जाना सम्भव हो पाया: शाप देने के लिए जिसे बुलाया गया उसे इस प्रकार खड़ा किया गया कि वह आशीर्वाद दे सके। जब मूसा ने इस घटना के बारे में व्यवस्थाविवरण 23:5 में बताया तब उसने कहा, "तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे निमित्त उसके शाप को आशीष में बदल दिया, इसलिये कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रेम रखता था।" इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना काम कर गई परन्तु इस्राएल के लिए बालाक की योजना निष्फल कर दी गई।

शापों को आशीषों में बदलने के लिए अर्थात उसके लोगों के विरुद्ध स्थापित की गई योजनाओं में बदलाव करने के लिए परमेश्वर के पास अपना तरीका है। जब लोग परमेश्वर के उद्देश्यों को पराजित करने की योजनाएँ बनाते हैं तब उसके पास एक योजना है जो उनकी बुरी मनसाओं को निरस्त कर देती है।

बाइबल बार बार यह दोहराती है कि शापों को आशीषों में बदलने के लिए परमेश्वर योग्य है:

1. यूसुफ। यूसुफ के भाइयों ने अपने उस भाई को मिस्र में बेच देने की योजना बनाई जिससे वे घृणा करने के कारण छुटकारा पाना चाहते थे। फिर भी परमेश्वर के पास भी एक योजना थी: उसने यूसुफ के भाइयों ने जो बुराई उसके साथ की उसका प्रयोग परमेश्वर ने उसके लिए अच्छा करने के लिए की जिससे आगे के वर्षों में उस देश पर जो अकाल आने वाला था उसमें इस्राएल को जीवित रख सके (उत्पत्ति 50:20)। उन्होंने जो बुरी योजना उसके विरोध में बनाई - अपने भाई पर जो उनका शाप था - उसे उसने आशीष में बदल दिया।

2. एस्तेर। हामान ने यहूदियों को नष्ट करने के द्वारा अपने शत्रु मोर्दकै को पराजित करने के लिए एक योजना बनाई। ठीक उसी समय परमेश्वर के पास भी उसकी अपनी योजना थी: उसने यहूदियों के शत्रुओं (जिसमें हामान भी शामिल था) को नष्ट करने के लिए, यहूदी जाति के लिए लोग यहूदी मत को स्वीकार करें इसके लिए, यहूदियों को अधिक समृद्धि के साथ आशीर्वाद देने के लिए और फ़ारसी सरकार में मोर्दकै को एक महत्वपूर्ण अधिकारी बनाने के लिए हामान की योजना का प्रयोग किया। परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए शाप को एक आशीष में बदल दिया।

3. यीशु। इससे पहले कि परमेश्वर का पुत्र अपना राज्य स्थापित करे और शैतान के उद्देश्यों को पराजित करें, शैतान ने उसे नष्ट करने की योजना बनाई। अपना पूरा बल लगाते हुए, यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए शैतान ने मनुष्य को प्रभावित किया परन्तु वह इस बात से अनजान था कि परमेश्वर के पास एक बड़ी योजना है और वह यीशु की मृत्यु को शैतान की सामर्थ्य को नष्ट करने के लिए एक माध्यम के रूप में काम में लेगा (इब्रा. 2:14)। एक शाप को आशीष में बदलते हुए यीशु मुर्दों में से जी उठा, उसने कब्र पर विजय पायी और शैतान पर विजय प्राप्त

की।

4. कलीसिया। प्रेरितों के काम के आरम्भ के अध्यायों में जिन यहूदियों का वर्णन किया गया उनके पास एक योजना थी: वे सताव के साथ कलीसिया का विस्तार करना बन्द कर देंगे। इसके विपरीत, परमेश्वर के पास एक योजना थी कि कलीसिया बढ़ती चली जाए। इस कारण यरूशलेम के सताव ने - जिसकी मनसा यह थी कि कलीसिया का फैलाव रोक दिया जाए - इसे बढ़ने के लिए सहायता दी क्योंकि इधर उधर बिखरे हुए मसीही लोगों ने सब स्थानों में सुसमाचार का प्रचार किया (प्रेरितों 8:4)। परमेश्वर ने सताव के शाप को आशीष में बदल दिया।

परमेश्वर समान प्रकार के प्रबन्ध का प्रयोग आज भी करता है। वह शापों को आशीर्वाद में बदलने की इच्छा रखता है और बदल सकता है। वह ऊपरी तौर पर दिखाई देने वाली पराजय को जीत में बदल सकता है और किसी दुखद घटना को आनन्द में परिवर्तित कर सकता है।

बिलाम सफ़ल हुआ ... और असफल हो गया। एक शाप को आशीष में बदल ने के लिए परमेश्वर ने बिलाम का इस्तेमाल किया। हो सकता है हम सोचें कि कहानी का अन्त यही है परन्तु ऐसा नहीं है। वास्तव में, बिलाम वह सब करने में सफ़ल हुआ जैसा बालाक चाहता था परन्तु व्यक्तिगत रूप से उस सफलता का लाभ पाने में असफल हो गया।

जब हम अध्याय 24 के बाद आगे निरन्तर पढ़ते हुए आगे बढ़ते हैं तब हम अध्याय 25 में एक दुखद घटना का सामना करते हैं। इस्राएली पुरुषों ने मोआबी लड़कियों के साथ व्यभिचार किया और स्वयं पर और अपनी जाति पर परमेश्वर के कोप का कारण बने (25:1-9)।

इस दुखद घटना से बिलाम को क्या लेना देना था? अध्याय 24 के अन्त में बिलाम अपने स्थान पर लौट गया। बाद में अध्याय 31 में इस्राएलियों ने - परमेश्वर की आज्ञा से - मिद्यान देश पर चढ़ाई की जिससे उन्हें उस पीड़ा के लिए दण्ड दिया जा सके जो उन्होंने इस्राएल को दी (31:1, 2)। हम पढ़ते हैं कि इस्राएलियों ने "[अन्य लोगों के साथ] बोर के पुत्र बिलाम को भी उन्होंने तलवार से घात किया" (31:8)। हम यह भी सीखते हैं कि मिद्यानियों के साथ इस्राएलियों के द्वारा किए गए आत्मिक और शारीरिक व्यभिचार बिलाम के द्वारा रचे गए षड्यन्त्र का ही परिणाम था (31:15, 16)। बिलाम ने मोआब के राजा को और मिद्यान के प्रधानों को कुछ इस प्रकार कहा होगा:

> यह स्पष्ट है कि इन लोगों को मेरे द्वारा शाप देने से हम अपने शत्रुओं के साथ इन लोगों पर जय प्राप्त नहीं कर सकते - क्योंकि उनका परमेश्वर बहुत ही शक्तिशाली है। अगर हम उनसे बचना चाहते हैं तो हमें उनके परमेश्वर को उनके विरुद्ध करना होगा। यह हम इस प्रकार कर सकते हैं: उनके साथ मित्रता करें, उन्हें अपने उत्सवों में आमन्त्रित करो, अपने देवताओं की पूजा में उन्हें शामिल करो, और तब तुम्हारी सुन्दर लड़कियाँ उन्हें फुसलाए। तब मैं तुम्हें आश्वासन देता हूँ कि उनका परमेश्वर उनके विरुद्ध हो जाएगा और उन्हें नष्ट कर देगा!

बिलाम ने इस प्रकार की सलाह दी इसलिए नए नियम में उसे निरन्तर दोषी ठहराया गया (2 पतरस 2:15, 16; यहूदा 11; प्रका. 2:14)।

बिलाम ने इस प्रकार की सलाह क्यों दी? ऊपरी तौर पर, वह अब भी बालाक का धन प्राप्त करना चाहता था। लालसा बिलाम के पतन का कारण बना। अनेक अन्य लोग भी इसी प्रकार के पाप के कारण पतन का शिकार हुए। आइए हम लालसा और लालच से स्वयं को बचाएँ।

यह कितनी धूर्त सलाह थी! कोई भी अन्य देवता प्रभु परमेश्वर को पराजित नहीं कर सकता था। कोई भी भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के लोगों को शाप नहीं दे सकता था जबकि उसने उन्हें आशीर्वाद दिया था। कोई भी सेना उनके विरुद्ध खड़ी नहीं हो सकती थी जब परमेश्वर उनकी ओर था। इस्राएल को पराजित करने का एकमात्र तरीका यह था कि लोगों को उनके परमेश्वर से अलग कर दिया जाए। बिलाम ने यह सच्चाई जान ली और एक कार्य पूरा करना सिखलाया जो पल भर के लिए सफ़ल रहा। सम्पूर्णता के साथ यह सफ़ल रहता अगर इसे रोका नहीं जाता।

बिलाम, जो एक बार रोक दिया गया था, इस्राएल की उन्नति को धीमा कर देने के दूसरे प्रयास में सफ़ल रहा। क्या उसने वह सोना और आदर प्राप्त किया जिसका वायदा बालाक ने किया था? शायद हाँ। फिर भी, मुझे सन्देह है कि जब वह बुराई से प्राप्त लाभों का आनन्द लेने की तैयारी में था उसी समय परमेश्वर के आशीर्वाद के साथ इस्राएल की सेना उस पर आ गिरी। वह अनौपचारिकता के साथ मारा गया। उसकी सलाह काम कर गई परन्तु यह उसके लिए ठहरी रहने वाली कोई व्यक्तिगत सफलता लेकर नहीं आयी।

निष्कर्ष। बिलाम की कहानी का हमारे लिए क्या अर्थ है? हमारा पाठ एक कविता के साथ आरम्भ हुआ था। कविता के तीन और कथन बिलाम के बारे में कुछ और तथ्य याद रखने में हमारी सहायता करेंगे:

बिलाम एक टेढ़ा मेड़ा व्यक्ति था जिसने नहीं कहा परन्तु उसका अर्थ हाँ था,
जिसे शाप देने के लिए बुलाया गया परन्तु आशीष देने के लिए खड़ा कर दिया गया;
जिसकी सलाह ने काम किया परन्तु इससे उसे कोई वास्तविक सफलता नहीं मिली।

वह परमेश्वर जो "एक रहस्यमयी तरीके से चलता है, जिससे अपने अद्‌भुत कार्य कर सके"[12] - जिसे सदैव यह आवश्यकता नहीं होती कि वह अपेक्षित तरीकों से काम करे या ठीक वैसा ही करे जैसी हम आशा रखते है - आज उसके पास हमारे लिए अनेक आश्चर्य रखे हुए हैं।

बिलाम: सन्देहयुक्त चरित्र का एक व्यक्ति (अध्याय 24)

बिलाम और बालाक की कहानी से हमें, बिलाम के चरित्र के बारे में किस प्रकार का निष्कर्ष निकालना चाहिए? उसे सकारात्मक रूप से देखा जाना चाहिए

या नकारात्मक रूप से देखा जाना चाहिए? वह अच्छा था या बुरा? गिनती के लेखक ने उसके चरित्र पर कोई टिप्पणी नहीं की परन्तु उस भविष्यद्वक्ता के दो विरोधाभासी चित्र प्रस्तुत करते हुए जान पड़ता है।

अध्याय 24 के निष्कर्ष के द्वारा पाठक यह निर्णय लें कि - चाहे वह कहानी के आरम्भ में कैसा भी रहा हो - बाद के समय के महान इब्रानी भविष्यद्वक्ताओं की तुलना में बिलाम परमेश्वर का एक सच्चा भविष्यद्वक्ता बन गया था। वास्तव में, जो सन्देश उसने दिए वे असाधारण हैं और मात्र परमेश्वर के शब्द बोलने के लिए उसका निर्णय सराहनीय है।

बिलाम के चरित्र की आवश्यक अच्छाई में किसी भी प्रकार का विश्वास गिनती की पुस्तक में बाद में चकनाचूर हो गया। अध्याय 31 में बिलाम का वर्णन फिर से किया गया है। वहाँ पर, पाठक यह पाता है कि परमेश्वर ने इस्राएल को एक मिशन दिया कि वह मिद्यानियों को (जिन्होंने अध्याय 25 में उसके लोगों को पाप में गिरने के लिए उकसाया) नष्ट कर दे और पाठक पढ़ सकता है कि इस्राएल की सेना ने "और बोर के पुत्र बिलाम को भी उन्होंने तलवार से घात किया" (31:8)। साथ ही, स्त्रियों को भी मारा जाना था क्योंकि "बिलाम की सम्मति से, पोर के विषय में इस्राएलियों से यहोवा का विश्वासघात इन्हीं ने कराया" (अध्याय 25 में इस्राएल के द्वारा किया गया पाप; देखें 31:16)।

ऊपरी तौर पर, अध्याय 24 के अन्त में बिलाम मेसोपोटामिया में अपने घर की ओर नहीं लौटा; परन्तु, "अपने स्थान पर लौट गया" (24:25) - अर्थात वह स्थान जहाँ वह मोआब में रह रहा था। तब, वह अब भी बालाक के द्वारा किए गए वित्तीय प्रतिफल प्राप्त करना चाहता था इसलिए उसने मोआबियों को सलाह दी कि वे अपनी लड़कियों का प्रयोग इस्राएलियों को फुसलाने के लिए करें जिससे वे "बालपोर" को पूजने लगें (25:1-3)। तब इस्राएल का परमेश्वर इस्राएल के विरुद्ध हो जाएगा और बालाक का लक्ष्य - कि इस्राएल शापित हो - पूरा कर लिया जाएगा। बिलाम की योजना ने काम किया; परन्तु परमेश्वर ने अन्ततः बालाक के लोगों को दण्ड दिया और साथ ही बिलाम भी मारा गया।

पुराने नियम के लेखक जिन्होंने बाद में बिलाम के बारे में बताया, उन्होंने यह वर्णन नहीं किया कि वह इस्राएलियों के पाप का कारण रहा। मीका ने अपने पाठकों को, बिलाम की प्रशंसा या खण्डन किए बिना, याद दिलाया कि "मोआब के राजा बालाक ने कौन सी युक्ति की, और बोर के पुत्र बिलाम ने उसको क्या सम्मति दी" (मीका 6:5)। मूसा ने, व्यवस्थाविवरण में, कहा कि कोई अम्मोनी या मोआबी यहोवा की सभा में न आने पाए क्योंकि अन्य बातों के साथ, मोआबियों ने इस्राएल को शाप देने के लिये बिलाम को दक्षिणा दी - परन्तु उसने आगे कहा कि परमेश्वर यहोवा ने उसके शाप को आशीष में बदल दिया (व्यव. 23:4, 5)। निर्वासन के बाद के समय में नहेम्याह ने इस पद के बारे में यहूदियों से बात की, जहाँ उसने विशेष रूप से वर्णन किया कि इस्राएल को शाप देने के लिए मोआबियों ने बिलाम को दक्षिणा दी (नहेम्य. 13:1, 2)। यहोशू की पुस्तक इस बात के साथ जोड़ती है कि इस्राएलियों ने मिद्यान के प्रधानों के साथ ही बिलाम को भी मार डाला (यहोशू

13:22) और बाद में बताती है कि इस्राएल को शाप देने के लिए बालाक ने बिलाम को बुलवाया फिर भी परमेश्वर ने ऐसा किया कि वह शाप के स्थान पर आशीष दे (यहोशू 24:9, 10)।

नए नियम में, प्रेरित लेखकों ने बिलाम की लालसा के लिए और इस्राएल को पाप में गिराने के लिए उसे बराबर दोषी ठहराया। पतरस ने कहा कि बिलाम ने "अधर्म की मजदूरी को प्रिय जाना" (2 पतरस 2:15), और यहूदा ने कुछ ऐसे लोगों के लिए कहा जो "मजदूरी के लिये … बिलाम के समान भ्रष्ट हो गए हैं" (यहूदा 11)। यूहन्ना ने रिकॉर्ड रखा कि यीशु ने कहा कि स्मुरना की कलीसिया के कुछ सदस्य "बिलाम की शिक्षा को मानते हैं, जिसने बालाक को इस्राएलियों के आगे ठोकर का कारण रखना सिखाया कि वे मूर्तियों पर चढ़ाई गई वस्तुएँ खाएँ और व्यभिचार करें" (प्रका. 2:14)।

बाइबल से दिए गए साक्ष्यों को देखते हुए हमें किस प्रकार का निष्कर्ष निकालना चाहिए? बिलाम, जो मेसोपोटामिया का एक प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता था वह मोआबियों के सामने परमेश्वर का वक्ता बन गया। स्पष्टता के साथ प्रभु परमेश्वर के सामर्थ्य को मानते हुए उसने बालाक को आश्चर्य में डालते हुए इस्राएल को निडर होकर आशीर्वाद दिया जबकि उसने इसे दक्षिणा दी थी। बालाक को कहे उसके शब्दों में ईमानदारी का घेरा देखा जा सकता है। फिर भी उसकी एक कमज़ोरी थी: उसने धन से प्रेम किया। वह बालाक के द्वारा किए गए वित्तीय प्रतिफल को पाना चाहता था इसलिए उसने एक तरीका बताया जिससे परमेश्वर अपने लोगों के विरुद्ध हो जाए। बिलाम एक ऐसा व्यक्ति था जिसके बारे में अनेक अच्छी बातें कही जा सकती है परन्तु उसकी कमज़ोरी ने उसे पाप में गिराया और उसको विनाश तक पहुँचा दिया।

समाप्ति नोट

[1]टिमोथी आर. एशली, *द बुक ऑफ़ गिनती,* द न्यू इंटरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1993), 486. [2]पुराने नियम में परमेश्वर के लिए प्राचीन शीर्षक *शदाय* का प्रयोग लगभग पचास बार किया गया है, अय्यूब की पुस्तक में इसका प्रयोग बार बार किया गया है। [3]आर. के. हैरिसन, *गिनती: एन एक्सेजेटिकल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 318. [4]आर. डेन्निस कोल, "गिनती," इन *जोनडर्वन इलस्ट्रेटिड बाइबल बेकग्राउन्ड्स कमेन्ट्री*, वोल. 1, *उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण*, एड. जॉन वॉल्टन (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2009), 384. [5]कहानी के आरम्भ में, परमेश्वर बिलाम से अप्रसन्न हो गया (22:22), और बिलाम अपनी गदही से अप्रसन्न हो गया (22:27). [6]निकट पूर्वकाल में दो प्रकार के राज दण्डों को प्रस्तुत किया गया है: "एक, लम्बी पतली छड़ी जिसका ऊपरी भाग सजावट के साथ था" और "एक छोटे हत्थे का युद्ध का गदा।" ऊपरी तौर पर, दूसरी प्रकार के राज दण्ड का यहाँ पर संकेत दिया गया है क्योंकि इसका प्रयोग शत्रु पर मार करने के लिए किया जाता था। (लॉरेन्स ई. टूम्ब्स, "स्केप्टर," इन *द इन्टरप्रिटर्स डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल*, एड. जॉर्ज आर्थर बट्रिट्रक [नाशविल्ले: एबिंगडन प्रेस, 1962], 4:235. कोल, 384 में एक छोटे राज दण्ड के साथ मार करते हुए एक फ़िरौन का चित्र देखें।) [7]इस पद को मसीहा के साथ जुड़ा हुआ देखने वाले यहूदी और मसीही व्याख्याताओं के सन्दर्भों के लिए, देखें

रोनॉल्ड बी. एल्लन, "गिनती," *एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति-गिनती*, संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 911. [8]गोर्डन जे. वेनहेम, *नम्बर्स*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 181. [9]उपरोक्त। [10]उपरोक्त।, 182. बारहवीं शताब्दी ईसा पूर्व में "समुद्री लोगों" की एक लहर के द्वारा इस क्षेत्र का बसाव, कनान में पलिश्तियों के पूर्व अस्तित्व से मना नहीं करता (उत्पत्ति 21:32; 26:1; निर्गमन 13:17; यहोशू 13:2, 3).

[11]सिन्थिया मे वेस्टोवर एल्डन, *द फ़र्स्ट बुक ऑफ़ सोंग एन्ड स्टोरी* (न्यु यॉर्क: पी. एफ़. कोल्लिअर एन्ड सन, 1903), 16. [12]विलियम कूपर, "गॉड मूव्ज़ इन अ मिस्टीरियस वे," *सोंग ऑफ़ फ़ेथ एन्ड प्रेज़*, कम. एन्ड एड. एल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोन्रे, लोस एंजेलेस: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।